इकाई 1 अमीर खुसरो का काव्य

इकाई की रूपरेखा

1.0 उद्देश्य

1.1 प्रस्तावना

1.2 अमीर खुसरो का जीवन परिचय

1.3 अमीर खुसरो का रचना संसार

1.4 अमीर खुसरो की हिंदी कविता

1.5 अमीर खुसरो की कविताओं में लोक जीवन

1.6 अमीर खुसरो की भाषा और काव्य सौंदर्य

1.7 अमीर खुसरो की कविता का वाचन और आस्वादन

1.8 सारांश

1.9 शब्दावली

1.10 उपयोगी पुस्तकें

1.11 बोध प्रश्नों के उत्तर

1.0 उद्देश्य

अमीर खुसरो खड़ी बोली हिंदी के आदि कवि हैं। उन्होंने तेरहवीं-चौदहवीं शताब्दी में खड़ी बोली हिंदी का 'हिंदवी' के रूप में सूत्रपात किया। उन्होंने अपने फारसी ग्रंथ 'दीबाचा-ए-दीवाने गुर्रतुल कमाल' में खुद को हिंदवी का ऐसा शायर कहा है, जो अपने दोस्तों को हिंदवी

में पद और छंद लिखकर नज़र करता है। ऐसे उल्लेखनीय और आदिकाल के केंद्रीय साहित्यकारों में एक की उपस्थिति और रचनात्मक व्यक्तित्व का अध्ययन इस इकाई का उद्देश्य है। इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप :

- अमीर खुसरो की जीवन यात्रा से परिचित हो पाएँगे;
- आदिकालीन साहित्य संसार में अमीर खुसरो की उपस्थिति का आकलन कर सकेंगे;
- अमीर खुसरो के रचनात्मक अवदान से आपका रिश्ता बन पाएगा;
- अमीर खुसरो की खड़ी बोली हिंदी की कविताओं को जान पाएँगे;
- अमीर खुसरो की कविताओं में उपस्थित लोक जीवन के बहुविध प्रसंगों से आप परिचित होंगे;
- अमीर खुसरो की भाषा और काव्य सौंदर्य को समझ सकेंगे; तथा
- अमीर खुसरो की कविता के वाचन और आस्वादन संबंधी धरातलों से परिचित हो पाएँगे।

1.1 प्रस्तावना

आदिकालीन साहित्यिक परिदृश्य विविधताओं से भरा है। इस काल के उत्तरवर्ती दौर में एक बहुत बड़े साहित्यिक व्यक्तित्व का अवतरण हुआ, जिन्हें अमीर खुसरो के नाम से जाना जाता है। अमीर खुसरो के पिता ने उनका नाम रखा– अबुल हसन। लेकिन उनका उपनाम खुसरो इतना मशहूर हुआ कि असली नाम लुप्तप्राय हो गया और वे अमीर खुसरो नाम से ही ख्यात हो गए। वे हिंदी के अत्यंत उल्लेखनीय रचनाकार इस अर्थ में भी हैं कि उन्होंने तेरहवीं-चौदहवीं सदी में खड़ी बोली हिंदी का 'हिंदवी' के रूप में सूत्रपात किया। गौरतलब है कि इस भाषा का नामकरण भी स्वयं उन्होंने ही किया, इस बात की जानकारी हमें अमीर खुसरो की फारसी रचना 'मसनवी नुह सिपहर' तथा 'मसनवी किरानुस्सादैन' से मिल जाती है।

वे अरबी, फारसी, तुर्की और हिंदी के गहरे जानकार थे। उन्होंने अनेक ऐसी विधाओं में हिंदी में रचना की जो उनके पहले नहीं मिलतीं। अन्य शब्दों में ऐसा कहा जा सकता है कि हिंदी भाषा में दोहों, गीतों, ग़ज़लों और मर्सियों की शुरुआत उन्होंने ही की। वे गाते भी थे। हिंदी ग़ज़लों को गाकर लोकप्रिय बनाने का श्रेय खुसरो को ही दिया जाता है। सावन, बरखा, फागुन आदि ऋतुओं पर लिखे उनके गीत लोगों की ज़ुबान पर चढ़ गए। सूफी दरगाहों में उनकी कव्वालियाँ खूब लोकप्रिय हुईं। फारसी भाषा से हिंदी भाषा के पहले शब्दकोश 'खलिकबारी' या 'निसाबे ज़रीफी' की रचना का श्रेय भी अमीर खुसरो को ही है। उन्होंने अपने गुरु मशहूर सूफी संत हज़रत निजामुद्दीन औलिया के कहने के बाद श्री कृष्ण की जीवनी पर 'हालात-ए-कन्हैया' नामक पुस्तक का लेखन किया। वे एक साथ साहित्यकार, इतिहासकार, संगीतज्ञ तथा सूफी विचारधारा के साधक और योद्धा थे।

सवाल यह है कि हिंदी कविता के इतिहास में उनकी प्रसिद्धि के आधार क्या हैं ? दरअसल अमीर खुसरो की पहेलियों, दो सखुने, निसबतें, अनमेलियाँ या ढकोसले, मुकरियों, सूफी साखियों या दोहें, हिंदवी गीत या कव्वालियों, फारसी-हिंदवी मिश्रित गज़लें और रुबाइयों ने खूब धूम मचाई। आगे उनके जीवन तथा उनकी रचनात्मकता के विभिन्न पक्षों की जानकारी दी जा रही है।

1.2 अमीर खुसरो का जीवन परिचय

नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी से प्रकाशित पुस्तक 'खुसरो की हिंदी कविता' में अनेक साक्ष्यों के आधार पर यह बताया गया है कि अमीर खुसरो के जीवन काल की अवधि 1255 ई. से 1324 ई. के बीच विस्तृत है। लेकिन 2016 ई. में प्रदीप खुसरो द्वारा लिखित पुस्तक

'अमीर खुसरो' के अनुसार यह अवधि 1253 ई. से 1325 ई. तक है। उनका जीवन अनेक अतियों के बीच गुज़रा। उनके जीवन में बरबादी और आबादी, तबाही और तामीर, जंग और अमन, दुख और सुख जैसे पहलू शामिल रहे जिनके बीच वे योद्धाभाव से जीवन गुजारने में सफल रहे। वे बहत्तर वर्ष तक ज़िंदा रहे। अमीर खुसरो के पिता अमीर सैफुद्दीन महमूद तुर्किस्तान में लाचीन कबीले के सरदार थे। चंगेज़ खान के दौर में मंगोलों या मुगलों के अत्याचार से परेशान होकर बलख हजारा से उस वक्त हिंदुस्तान आए जब दिल्ली की सत्ता पर कुतुबुद्दीन ऐबक के एक गुलाम शमसुद्दीन इल्तुतमिश का शासन हो चुका था। अमीर सैफुद्दीन उत्तर प्रदेश के एटा जिले में गंगा किनारे पटियाली नामक गाँव में बस गए। संयोग ऐसा हुआ कि उनकी पहुँच दिल्ली के सुलतान शमसुद्दीन इल्तुतमिश के यहाँ हो गई और उनके सैनिक गुणों और दिलेरी से प्रभावित होकर सुलतान ने जल्दी ही उन्हें शाही फौज में सरदार की पदवी दे दी। सैफुद्दीन के तीसरे बेटे का नाम था– अबुल हसन यमीनुद्दीन मुहम्मद। यही अबुल हसन अमीर खुसरो नाम से मशहूर हुए।

अमीर खुसरो की परवरिश अन्य बच्चों से अलग कैसे थी, इसे समझने के लिए उनकी पारिवारिक पृष्ठभूमि पर एक नज़र डालना मुनासिब होगा। उनकी माँ माया देवी उर्फ दौलत नाज़ या सय्यदा मुबारक बेगम राजस्थान के एक संपन्न हिंदू राजपूत परिवार से थीं। इनके पिता का नाम था– अमीर एमादुल्मुल्क रावत अर्ज़। सुलतान बलबन के युद्धमंत्री एमादुल्मुल्क राजनीतिक दबाव के कारण नए-नए मुसलमान बने थे। इस्लाम ग्रहण करने के बावजूद उनके घर में हिंदू रीति-रिवाजों का संजीदगी से पालन होता था। उनके घर में गाने-बजाने का माहौल था। तात्पर्य यह है कि खुसरो के दिलो-दिमाग पर नाना के घराने और पिता के घराने का समन्वित प्रभाव पड़ा। अमीर खुसरो जब नौ वर्ष के थे तभी उनके पिता की मृत्यु

हो गई। पिता की मौत के बाद नाना ने अमीर खुसरो की शिक्षा-दीक्षा का उत्तरदायित्व निभाया। उन्हें तीरंदाजी, घुड़सवारी और सैन्य प्रतिभाओं के साथ ही संस्कृत, 'रामायण', 'महाभारत', संगीत, फारसी, अरबी, तुर्की, 'कुरआन शरीफ', 'हदीस' आदि में महारत हासिल करने का मौक़ा मिला। बीस वर्ष की आयु में उन्होंने पहले दीवान (काव्य-संग्रह) 'तोहफतुसिग्र' यानी 'जवानी का तोहफा' की रचना की। फारसी पद्य और गद्य में खड़ी बोली के मुहावरों का पहला प्रयोग उनकी रचनाओं में मिलता है।

कम उम्र में ही वे दिल्ली की साहित्यिक दुनिया में एक उम्दा शायर के रूप में प्रतिष्ठित हो गए। अमीर खुसरो ने अपने गुरुओं का उल्लेख स्वयं किया है। ग़ज़ल के क्षेत्र में शेख़ सादी शीराज़ी, मसनवी के क्षेत्र में निजामी गंजवी, सूफी और नीति संबंधी काव्य क्षेत्र में खाकानी और सनाई का तथा कसीदे के क्षेत्र में कमाल इस्माइल का उन्होंने उल्लेख किया है। उन्होंने अपने दीवान 'गुर्रतुल कमाल' (शुक्ल पक्ष की पहली कमाल की रात) में हज़रत निजामुद्दीन औलिया के प्रति गहरे सम्मान का भाव व्यक्त किया है। जब खुसरो बीस साल के थे तब उनके नाना एमादुल्मुल्क रावत अर्ज़ का 113 वर्ष की उम्र में 1273 ई. में देहावसान हो गया। अपने नाना की लोकप्रियता के बारे में वे लिखते हैं, ''तुर्कों ने अपने कुलह (टोपी) का त्याग कर दिया है और दुख के कारण अपने चोगों को घुटनों तक फाड़ दिया है। हिंदू रईस, बराहमनों या ब्राहमणों की तरह नंगे सर फिरते हैं और इस विपत्ति पर रोते हैं।'' उनके निधन के बाद खुसरो को रोजी-रोटी की चिंता हुई; वे गयासुद्दीन बलबन के भतीजे अलाउद्दीन अख्तियारुद्दीन मोहम्मद किशली खाँ उर्फ मालिक छज्जू के पास गए जिसने उन्हें अपना सहयोगी बना लिया। वहीं पर उनकी मुलाक़ात गयासुद्दीन बलबन के बड़े बेटे बुगरा खाँ से हुई। उनकी विद्वत्ता से प्रभावित होकर बुगरा खाँ उन्हें पटियाला स्थित अपने दरबार में रख

लिया। जब बुगरा खाँ बंगाल की बगावत को कुचलने के लिए रवाना हुआ तब अमीर खुसरो भी फौज़ में शामिल किए गए। उन्होंने जंग को बहुत करीब से देखा। गयासुद्दीन बलबन ने बुगरा को बंगाल का हाकिम नियुक्त किया। उसने खुसरो को अपने साथ रखना चाहा पर खुसरो दिल्ली लौट आए। उन्होंने अपने एक दीवान में लिखा, ''माँ की ममता, गुरु का अध्यात्मिक लगाव और देहली की मोहब्बत, गंगा-जमुना के किनारे मुझे हर जगह से, हर एक कदरदान से खींच लाती थी। मेरी शायरी तो उड़ी-फिरती थी और मैं खुद उड़ फिर कर देहली या पटियाली चला आता था। मगर आखिर घर बढ़ा, खर्चे बढे।'' यहीं उनकी मुलाकात दिल्ली के अमीर हसन सिज्जी देहलवी से हुई। गयासुद्दीन बलबन ने अपने दरबार में दोनों दोस्तों को ऊँची हैसियत दी। अमीर खुसरो ने बलबन की शान में बहुत कसीदे लिखे। उनकी मुलाक़ात बलबन के बड़े लड़के शहजादा नासिरुद्दीन मुहम्मद कान से हुई, वह दोनों दोस्तों को मुल्तान ले गया। वहाँ वे पाँच साल तक रहे। चिंगिस के मंगोल हमले में शहजादा मारा गया, खुसरो भी युद्ध में सम्मिलत हुए थे, उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। किसी तरह वे वहाँ से भाग निकले। वे दिल्ली आए और इस वाकए को बलबन को सुनाया, तीन दिन बाद बलबन की भी मौत हो गई। खुसरो अपनी माँ सय्यदा मुबारक बेगम के साथ पटियाली गाँव चले आए।

कुछ वर्षों बाद बलबन के चचेरे भाई हातिम खान ने खुसरो को अवध बुलाकर अपना दरबारी बना लिया। खुसरो अवध में दो साल रहे। उन्होंने यहाँ के प्रवास में 'मसनवी अस्पनामा' का लेखन किया। इसमें 240 शेर शामिल हैं, जिनमें 180 राम, लक्ष्मण और सीता की शान में लिखे गए हैं। कुछ वर्षों बाद वे बुगरा खाँ के बेटे कैकुबाद के दिल्ली दरबार में बुला लिए गए। जब पिता पुत्र में लड़ाई हुई, तब अमीर खुसरो ने सुलह कराया। गुलाम वंश के शासक

कैकुबाद के बाद खिलजी वंश के जलालुद्दीन फिरोजशाह खिलजी जब दिल्ली का शासक बना तब उसने अमीर खुसरो को अमीर की पदवी दी। खुसरो के समकालीन इतिहासकार जियाउद्दीन बरनी ने लिखा है ''सुलतानों की अय्याशी और दगाबाज़ साथियों की राजनीति से उन्होंने अपने दामन को सदा बचाए रखा। वे दिल्ली में नियमित रूप से औलिया साहब की खानकाह में जाते थे, फिर भी वे नीरस संत नहीं थे। वे गाते थे, हँसते थे, नर्तकियों का नृत्य और गायन भी देखते थे और सुनते थे।'' सुलतान जलालुद्दीन खिलजी के भतीजे और दामाद अलाउद्दीन खिलजी ने अपने चाचा और श्वसुर की हत्या कर दिल्ली की सल्तनत हथिया ली। खुसरो के प्रति उसका भी दृष्टिकोण उदार था।

1316 ई. में सुलतान के छोटे बेटे कुतुबुद्दीन मुबारक शाह खिलजी ने धोखे से दिल्ली की सल्तनत हासिल कर ली। लेकिन उसने खुसरो के दरबारी शायर का दर्जा बहाल रखा। 1321 ई. में गयासुद्दीन तुगलक जो दिल्ली का शासक बना, उसने अवध-बंगाल फतह के लिए गए लश्कर के साथ अमीर खुसरो को भेज दिया। इस बीच ख्वाजा निजामुद्दीन औलिया बीमार हो गए। 1325 ई. में जब अमीर खुसरो बंगाल से दिल्ली लौट रहे थे तभी ख्वाजा का निधन हो गया। अमीर खुसरो के लिए यह घटना असहनीय थी। उन्होंने अपनी सारी संपत्ति गरीबों और यतीमों को बाँट दी। खुद गुरु निजामुद्दीन औलिया की दरगाह पर काला कपड़ा पहन कर शोकमग्न दशा में रहने लगे, जहाँ छः महीने के भीतर उनका निधन हो गया।

1.3 अमीर खुसरो का रचना संसार

अमीर खुसरो का रचना संसार संख्या और विषय– दोनों ही दृष्टियों से विस्तृत है। नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी के अनुसार उन्होंने निन्यानवे पुस्तकों की रचना की, जिनमें बाईस उपलब्ध हैं। इतिहास, अध्यात्म, प्रेम, गाथाएँ आदि उनके वर्ण्य विषय हैं। प्राप्त ग्रंथों की सूची

इस प्रकार है– 'मसनवी किरानुस्सादैन', 'मसनवी मतलउअनवार', 'मसनवी शोरों व खुसरू', 'मसनवी लैला मजनूँ', 'मसनवी आइना-ए-सिकंदरी', 'मसनवी हश्त्बहिश्त', 'मसनवी अस्पनामा', 'मसनवी खिज्रनामा या खिज्र खाँ देवल रानी या इश्किया', 'मसनवी नुह सिपहर', 'मसनवी तुगलकनामा', 'खजायनुल्फुतुह या तारीखे अलाई', 'इंशाएखुसरू या ख्यालाते खुसरू', 'रसायलुएजाज या एजाजे खुसरवी', 'अफजालुल्फबाएद', 'राह्तुल्मुजी', 'खालिकबारी', 'जवाहिरुल्बह्र', 'मुकाल', 'किस्सा चहार दरवेश', 'दीवान तुहफुतुस्सग्र', 'दीवानवस्तुल्हयात', 'दीवान गर्र्तुलकमाल', 'दीवानवकीय नकीय'।

1.4 अमीर खुसरो की हिंदी कविता

अमीर खुसरो की हिंदी (हिंदवी) रचनाएँ हैं :

- **खालिकबारी या निसाब-ए-ज़रीफी या मंजूम-ए-खुसरो–** यह हिंदवी फारसी शब्दकोश है जो काव्यमय है।
- **दीवान-ए-हिंदवी या कलामे-ए-हिंदवी–** इसमें आम आदमी के लिए पहेलियाँ, ढकोसले संकलित है।
- **तराना-ए-हिंदवी या कलाम-ए-हिंदवी**– इसमें आम भाषा में पहेलियों, ढकोसलों, निस्बतों, दो सुखनों, मुखम्मस, सावन, बरखा, शादी आदि गीतों, ग़ज़लों, कव्वालियों को संकलित किया गया है।

- **हालात-ए-कन्हैया व किशना**– ऐसी कथा है कि गुरु निजामुद्दीन औलिया के सपने में भगवान श्री कृष्ण आए फिर गुरु ने खुसरो से कहा कि तुम हिंदवी में कृष्ण की स्तुति लिखो। गुरु के निर्देशानुसार श्री कृष्ण पर यह पुस्तक खुसरो ने तैयार की।
- **नज़राना-ए-हिंदवी**– सांस्कृतिक एकता का गुलदस्ता।
- **लुआली-ए-उमान या जवाहर-ए-खुसरवी**– यह भी खुसरो की कविताओं का संकलन है।

अमीर खुसरो को हिंदी से कितना लगाव था , इसका अंदाजा इससे लगाया जा सकता है कि वे अपने को हिंदुस्तान की तूती कहते हैं और और खुद को हिंदवी भाषा की मिठास का कायल बताते हैं। वे दीवान 'गुर्रतुलकमाल' में कहते हैं :

तुर्क-ए-हिंदुस्तानियम मन हिंदवी गोयम जवाब,

चु मन तूती-ए-हिंदम अज़ रास्त पुरसी।

जे मन हिंदवी पुरस ता नग्ज़ गोयम,

शकर मिस्त्री न दारम कज़ अरब गोयम सुखन।।

अर्थात मैं हिंदुस्तानी तुर्क हूँ, मैं हिंदुस्तान की तूती हूँ। अगर वास्तव में मुझसे कुछ पूछना चाहते हो तो हिंदवी भाषा में पूछो। मैं तुम्हें हिंदवी में अनुपम बातें बता सकूँगा। मेरे पास मिस्र की शक्कर नहीं है जो अरबी में बात करूँ।

यहाँ हिंदवी से तात्पर्य तेरहवीं-चौदहवीं शताब्दी की वह भाषा या बोली है जो आम जनता द्वारा बोली या समझी जाती थी। हिंदवी भाषा दरअसल खड़ी बोली है। वे बहुभाषाविद थे,

लिहाजा उन्होंने अपनी कविता समेत अन्य रचनाओं में जिस हिंदी का प्रयोग किया वह शुरू से ही सामासिक बनावट के साथ आगे बढ़ी।

बोध प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए।

   (क) अमीर खुसरो का वास्तविक नाम बताइए।

   .....

   .....

   (ख) अमीर खुसरो ने अपनी भाषा को किस नाम से पुकारा।

   .....

   .....

   (ग) अमीर खुसरो के पिता का नाम बताइए, भारत में उनका निवास कहाँ था?

   .....

   .....

   (घ) अमीर सैफुद्दीन किस कबीले से संबंधित थे और कहाँ के रहने वाले थे?

   .....

   .....

2. अमीर खुसरो के जीवन का परिचय दस पंक्तियों में दीजिए।

   .....

   .....

   .....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

3. अमीर खुसरो की 'हिंदवी' की प्रमुख रचनाओं का परिचय दीजिए। (उत्तर पाँच पंक्तियों में दीजिए)।

.....

.....

.....

.....

.....

1.5 अमीर खुसरो की कविताओं में लोक जीवन

अमीर खुसरो का लोक से गहरा ताल्लुक था। वह लोक जिसमें उनका जीवन गुज़रा , उसकी अनेक छवियों को उन्होंने अपनी कविता में प्रस्तुत किया। धार्मिक आडंबरों से दूर उनकी कविता सूफी विचार में गहरे डूब कर नए तरह के काव्य आस्वाद को रचने में सफल रही। लोकरंग में रचे-पगे खुसरो ने वसंत, सावन, बरखा, पनघट, हिंडोला(झूला), होली, चक्की, शादी-ब्याह, विदाई, साजन, बाबुल, ईश आराधना आदि पर गीतों की रचना की। उनके द्वारा रचित दोहों, ग़ज़लों और कव्वालियों में लोकरंग की अनुपम छटा नज़र आती है।

लोक परंपरा की सबसे मजबूत बानगी उनकी पहेलियो में नज़र आती है। लोक साहित्य में सबसे पहले अमीर खुसरो ने ही पहेलियाँ बनाने का रिवाज़ शुरू किया। संस्कृत साहित्य में गौण रूप में प्रहेलिका नाम से पहेलियाँ मिल जाती हैं, लेकिन खुसरो ने इन्हें अपने बेमिसाल अंदाज़ में प्रस्तुत किया। उनकी रचनाओं में दो तरह की पहेलियाँ नज़र आती हैं– 'बूझ पहेली' और 'बिन बूझ पहेली'। बूझ पहेली में उत्तर पहेली में ही निहित होता है, जबकि बिन बूझ पहेली में अनुमान और युक्तियों के सहारे उत्तर हासिल किए जाते हैं। लोक संस्कृति की निरंतरता की सुवास समेटे इन पहेलियों के महत्व का अंदाजा इससे लगाया जा सकता है कि अभी भी लोगों की जुबां पर ये चढ़ी हुईं हैं। कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं :

एक नार वह दाँत दँतीली। पतली दुबली छैल छबीली।।

जब बा तिरियहि लागै भूख। सूखे हरे चबावे रूख।।

जो बताय वाही बलिहारी। खुसरो कहे वरे को आरी।।

– आरी (बूझ पहेली)

बिन बूझ पहेली का एक लोकप्रसिद्ध उदाहरण देखिए। अनुमान के सहारे इसका उत्तर पाना आसान होता है :

एक थाल मोतियों से भरा, सबके सिर पर औंधा धरा।

चारो ओर वह थाली फिरे, मोती वासे एक ना गिरे।।

– आसमान (मोती-तारे,बिन बूझ पहेली)

लोक रंग का एक अहम हिस्सा लोगों की जुबां पर चढ़ी खुसरो रचित वे साखियाँ हैं, जो आध्यात्मिक रंगतों के साथ हैं, उदाहरण के लिए :

रैन चढ़ी रसूल की, सो रंग मौला के हाथ।

जाके कपरे रंग दिए, सो धन-धन वाके भाग।।

भक्ति प्रेम की तन्मयता का सुंदर पक्ष है। इस रंग के अनेक दोहें खुसरो द्वारा रचे गए हैं। लोक मन में बसे इन दोहों या साखियों की याद अभी भी लोगों के जेहन में है, नजीर के रूप में लोग इन साखियों को व्यवहार में लाते हैं :

खुसरो दरिया प्रेम का, सो उल्टी वाकी धार।

जो उबरा सो डूब गया, जो डूबा सो पार ।।

X X

खुसरू रैन सोहाग की, जागी पी के संग।

तन मेरो मन पीउ को, दोऊ भए एक रंग।।

इन दोहों के लोक आग्रह का असर रीतिकाल के बिहारी जैसे सुप्रसिद्ध रचनाकार के एक दोहे पर देखा जा सकता है :

या अनुरागी चित्त की गति समुझै नहिं कोय।

ज्यौं-ज्यौं बूड़े स्याम रँग त्यौं-त्यौं उज्जल होय।।

भारतीय लोक जीवन का एक अहम पक्ष संगीत है। उन्होंने संगीत की दुनिया में कुछ नायाब तोहफे दिए– कव्वाली, तराना, राग यमन आदि। इनमें कव्वाली लोक मन के सर्वाधिक करीब है। हिंदी संसार में उनकी एक कव्वाली खासी लोकप्रिय हुई :

छाप तिलक तज दीन्ही रे, तो से नैना मिला के।

प्रेम बटी का मदवा पिलाके

मतवारी कर दीन्हीं रे मो से नैना मिलाई के।

खुसरो निज़ाम पै बलि-बलि जइए,

मोहे सुहागन कीन्हीं रे, मोसे नैना मिला के।।

लोक में व्याप्त मुकरियाँ और दो सखुना खूब लोकप्रिय हुए। इन्हें शुरू करने का श्रेय भी अमीर खुसरो को है। मुकरियों में पद्य शैली में सवाल, संभावना और उत्तर का ज़िक्र होता था, जैसे :

उछल-कूद के वह जो आया। धरा-ढँका वह सब कुछ खाया।

दौड़ झपट जा बैठा अंदर। ऐ सखी साजन ना सखी बंदर।।

आधुनिक काल में भारतेंदु हरिश्चंद्र ने ऐसी मुकरियों की रचना की, जिन्हें खासी लोकप्रियता भी हासिल हुई। अमीर खुसरो ने दो सखुनों की भी रचना की। इनमें एक से अधिक सवाल पूछे जाते हैं, जिनका उत्तर एक ही होता है। अलग-अलग सवालों का जवाब एक ही होता है, पर उसके संदर्भों में विभिन्नता होती है, श्लेष अलंकार की तरह। उदाहरण के लिए :

- रोटी जली क्यों, घोड़ा अड़ा क्यों,

  पान सड़ा क्यों?

  उत्तर– फेरा न था।

- अनार क्यों न चक्खा,

  वजीर क्यों न रखा?

उत्तर– दाना न था।

खुसरो के दो सखुने लोक में खूब सराहे गए। सखुन फारसी भाषा का शब्द है, उर्दू भाषा में यह सुखन भी लिखा जाता है, इसका मतलब कथन या उक्ति है। खुसरो के दो सखुने प्रश्न रूप में होते थे, जिनका जवाब एक ही होता था। कुछ उदाहरण देखिए :

दीवार क्यों टूटी? राह क्यों लूटी?

जवाब– राज न था। दीवार बनाने वाला राजमिस्त्री नहीं था, इसलिए दीवार टूटी। उसी तरह दूसरी ओर देश में राज न था अर्थात राजव्यवस्था नहीं थी, कानून व्यवस्था नहीं थी, लिहाजा राहजनी बढ़ गई थी, राह में लोगों को लूटा जा रहा था।

भारत में लोकरंग का एक पक्ष उन ऋतु गीतों से बना है, जिनसे जीवन-जगत के विविध पक्ष जुड़े हैं। उन्होंने सावन, वसंत जैसे अनुभवों पर अनेक पद्य लिखे। उदाहरण के लिए :

जो पीया आवन कह गए–अजहुँ न आए स्वामी हो।

ए जो पिया आवन कह गए।।

आवन आवन कह गए आए न बारह मास।

ए हो जो पिया आवन कह गए।।

उसी तरह सावन मास में गाए जानेवाले झूले के अनेक गीत लोक में व्याप्त हैं, जिनकी रचना अमीर खुसरो ने की :

झुलना झूला झुलावो री

झुलना झुलावो री, आवो री

अम्बुआ की डारी पे कोयल बोले रामा

कूक कूक जिया रे, झुलना झुलावो री

नन्हीं-नन्हीं बरखा बून्दनियाँ

बरसत बहार आये बरखा फुहार

अबहुँ ना आए बलामवा, झुलना झुलावो री।

अमीर खुसरो के नाम से ऐसे गीत भी मशहूर हैं, जो शादी-ब्याह में गाए जाते हैं। उन अनेक गीतों में कुछ बेहद लोकप्रिय हैं, उदाहरणस्वरूप निम्नलिखित गीत :

काहे को ब्याही बिदेस रे,

लखि बाबुल मोरे!

हम तो बाबुल तोरे बागों की कोयल

कुहुकत घर-घर जाऊं, लखि बाबुल मोरे।

हम तो बाबुल तोरे खेतों की चिड़ियाँ

चुग्गा चुगत उड़ि जाऊं, लखि बाबुल मोरे।

हम तो बाबुल तोरे बेले की कलियाँ

जो मांगे चली जाऊं, लखि बाबुल मोरे।

हम तो बाबुल तोरे खूंटे की गइया

जित हांको हंक जाऊं लखि बाबुल मोरे।

इस तरह अमीर खुसरो की कविताएँ लोक रंग में डूबे अहसासों की सफल और सुंदर अभिव्यक्तियाँ हैं। यह कहना अतिशयोक्ति न होगा कि अपने लोक अहसासों के कारण ही उनकी कविताएँ हिंदी मन में शताब्दियों बाद भी रची-बसीं हैं।

1.6 अमीर खुसरो की भाषा और काव्य सौंदर्य

अमीर खुसरो बहुभाषाविद थे। उनका फारसी, तुर्की और अरबी भाषा पर जबर्दस्त अधिकार था। खड़ी बोली के आदि प्रयोगकर्ता के रूप में उनकी ख्याति है। उन्होंने घोषणा की कि वे ऐसे भारतीय तुर्क हैं जिनकी मातृभाषा हिंदी है। अपने दीवान 'गुर्रतुलकमाल' में उन्होंने कहा :

तुर्क-ए-हिंदुस्तानियम मन हिंदवी गोयम जवाब
चु मन तूती-ए-हिंदम अज़ रास्त पुरसी।
जे मन हिंदवी पुरस ता नग्ज़ गोयम ,
शकर मिस्री न दारम कज़ अरब गोयम सुखन।।

अर्थात 'मैं हिंदुस्तानी तुर्क हूँ, मैं हिंदुस्तान की तूती हूँ अगर वास्तव में मुझसे कुछ पूछना चाहते हो तो हिंदवी भाषा में पूछो। मैं तुम्हें हिंदवी में अनुपम बातें बता सकूँगा। मेरे पास मिस्र की शक्कर नहीं कि अरबी में बात करूँ।' यहाँ 'हिंदवी' से तात्पर्य तेरहवीं-चौदहवीं शताब्दी की उस भाषा या बोली से है, जो उस समय दिल्ली और उसके आस-पास के इलाकों के साथ हिंदुस्तान के कुछ अन्य इलाकों में भी बोली जाती थी।

अमीर खुसरो की यह हिंदवी दरअसल खड़ी बोली है। इसकी जड़ें संस्कृत में थीं, पर दिल्ली तथा उसके आसपास की अनेक भाषाओं सहित अन्य अनेक भाषाओं के शब्द भी सहजता से शामिल हो गए थे। उन भाषाओं की पहचान जिन रूपों में की जा सकती हैं, वे हैं– ब्रजभाषा,

राजस्थानी, अवधी, हरियाणवी, मुलतानी, लाहौरी(पंजाबी), सिंधी, गुजराती, मराठी, अपभ्रंश आदि। अमीर खुसरो ने अपनी हिंदवी रचनाओं में फ़ारसी, अरबी, तुर्की आदि के शब्दों का भी प्रयोग किया।

अमीर खुसरो के दौर में दरबारी भाषा फ़ारसी थी। कर्मकांड की भाषा संस्कृत थी, लेकिन बोलचाल की भाषा अलग थी। खुसरो ने इसे हिंदवी' कहा। उन्होंने इस 'हिंदवी' पद का दो अर्थों में प्रयोग किया, दिल्ली और उसके आसपास के इलाकों में बोली जाने वाली भाषा– खड़ी बोली और दूसरी ओर उनके समय हिंदुस्तान में बोली जाने वाली अन्य भाषाएँ।

उन्होंने भारत के अनेक हिस्सों का भ्रमण किया था, परिणाम यह हुआ कि वे अनेक भारतीय भाषाओं के संपर्क में आए। उन्होंने पहली बार भारतीय भाषाओं का सर्वेक्षण किया। 'नूर सिपहर' उस समय की हिंदुस्तानी भाषाओं का प्रामाणिक दस्तावेज़ प्रस्तुत करती है। इसके अतिरिक्त अपने फारसी-हिंदी शब्दकोश 'ख़ालिकबारी' में बारह बार हिंदी शब्द का प्रयोग किया।

अमीर खुसरो की विभिन्न रचनाओं में प्रयुक्त भाषा आखिर क्यों महत्वपूर्ण हैं? दरअसल उनकी भाषा लोक के करीब है। नागरी प्रचारिणी सभा से प्रकाशित पुस्तक 'अमीर खुसरो' में ब्रजरत्न दास ने ठीक ही दर्ज किया है, ''खुसरो को हुए सात सौ वर्ष व्यतीत हो गए किंतु उनकी कविता की भाषा इतनी सजी सँवरी और कटी-छँटी हुई है कि वह वर्तमान भाषा से बहुत दूर नहीं अर्थात उतनी प्राचीन नहीं जान पड़ती। भाटों और चारणों की कविता एक विशेष प्रकार के ढाँचे में ढाली जाती थी। चाहे वह खुसरो के पहले की अथवा पीछे की हो तो भी वह वर्तमान भाषा से दूर और खुसरो की भाषा से भिन्न और कठिन जान पड़ती है। इसका कारण

साहित्य के संप्रदाय की रूढ़ि का अनुकरण ही है। चरणों की भाषा कविता की भाषा है, बोलचाल की भाषा नहीं। ब्रजभाषा के 'अष्टछाप' आदि कवियों की भाषा भी साहित्य, अलंकार और परंपरा के बंधन से, खुसरो के पीछे की होने पर भी उससे कठिन और भिन्न है। कारण केवल इतना ही है कि खुसरो ने सरल और स्वाभाविक भाषा को ही अपनाया है, बोलचाल की भाषा में लिखा है, किसी सांप्रदायिक बंधन में पड़कर नहीं।'' खुसरो की भाषा के मिजाज़ अलग-अलग हैं। वे अभिधा की भाषा में कविता कहते हैं, साथ ही वे लक्षणा और व्यंजना की भाषा की मारक क्षमता का भी बेहतरीन उपयोग करते हैं। उनकी पहेलियों में लक्षणा के बेहतरीन उदाहरण मिल जाते हैं। उसी तरह उनके आध्यात्मिक दोहों/कव्वालियों में व्यंजना शब्द शक्ति की झलक मिलती है। अमीर खुसरो की भाषा और काव्य सौंदर्य की खूबियों के अनेक रंग हैं, जिन्हें देख कर यह समझ पाना मुश्किल हो जाता है कि यह खड़ी बोली हिंदी के बेहद आदिम रंग का आस्वाद है।

बोध प्रश्न

4. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर दो-तीन पंक्तियों में दीजिए।

(क) 'बूझ पहेली' तथा 'बिन बूझ पहेली' में अंतर बताइए।

.....

.....

.....

(ख) अमीर खुसरो की 'हिंदवी' का तात्पर्य किस भाषा-रूप से हैं?

.....

.....

.....

(ग) 'दो सखुने' का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

(घ) अमीर खुसरो ने 'हिंदवी' से अपने संबंध का बयान किस प्रकार किया था?

.....

.....

.....

5. अमीर खुसरो की भाषागत विशिष्टताओं पर प्रकाश डालिए। (उत्तर पाँच पंक्तियों में दीजिए)।

.....

.....

.....

.....

.....

6. अमीर खुसरो के काव्य में अभिव्यक्त लोक पक्ष की विविधता का सोदाहरण परिचय दीजिए। (उत्तर दस पंक्तियों में दीजिए)।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

1.7 अमीर खुसरो की कविता का वाचन और आस्वादन

कविता का वाचन

देखिए– परिशिष्ट

कविता का आस्वादन

- **छाप-तिलक तज दीन्ही रे, तो से नैना मिला के। ...**

संदर्भ

प्रस्तुत गद्यांश अमीर खुसरो द्वारा रचित प्रसिद्ध कव्वाली है।

व्याख्या

विषय-वस्तु और काव्य तकनीक दोनों नज़रिए से यह एक बेहतरीन रचना है। अमीर खुसरो सूफी संत हजरत निजामुद्दीन औलिया के पट्ट शिष्य थे। अपने गुरु के प्रति अपनी निष्ठा को प्रकट करते हुए खुसरो ने यह कव्वाली लिखी है। भारतीय अद्वैतवाद और इस्लामी एकेश्वरवाद की यह विशिष्टता है कि इनमें अपने इष्ट के प्रति एकनिष्ठ समर्पण को प्रकट

करने के लिए अनेक ऐसे बिंबों की रचना की जाती है, जिनमें दुनियावी संबंधों की अद्वितीय गहराई प्रकट हो। इस कव्वाली में प्रियतम से निगाहें मिल जाने अर्थात प्रेम के स्वीकार के बाद के असीम आनंद का वर्णन है। छाप-तिलक छोड़ना अर्थात एकनिष्ठ प्रेम की राह में आने वाली सभी बाधाओं को छोड़ देना। प्रेम की राह में बाधा के रूप में आने वाले अनुष्ठानों को त्यागे बिना प्रेम का मिलना असंभव है। आँख मिलने के बाद की असीम प्रसन्नता को प्रकट करने के लिए, खुसरो एक और बिंब का प्रयोग करते हुए कहते हैं यह घटना प्रेम बटी अर्थात प्रेम रूपी जड़ी-बूटी खाने के बाद छा जाने वाली मदहोशी जैसी है। जिससे प्रेमिका मतवाली हो गई है यानी प्रेम का नशा उस पर छा गया है। खुसरो रूपी प्रेमिका कहती है कि मैं निजाम यानी निजामुद्दीन औलिया पर बलि-बलि जाऊँ, कुर्बान हो जाऊँ। अंत में वह कहती है कि मैं सुहागन हो गई। यानी उसके प्रेम और समर्पण को निजामुद्दीन औलिया के रूप में आधार मिल गया। अमीर खुसरो की यह कव्वाली उस भारतीयता की सुंदर अभिव्यक्ति है, जिसमें अनेक धाराएँ मिलकर एक बड़ी धारा को संभव करती है। बिंबों के सघन प्रयोग की दृष्टि से भी यह कविता महत्वपूर्ण है।

विशेष

ईश्वर के प्रति अभिव्यक्त प्रेमाभक्ति का स्वरूप भारतीय पद्धति का है।

- **गोरी सोवे सेज पर, मुख पर डारे केस। ...**

व्याख्या

खुसरो अपने दोहों के कारण भी बहुत प्रसिद्ध हुए। खुसरो ने यह दोहा अपने गुरु हजरत निजामुद्दीन औलिया के देहावसान अर्थात मृत्यु पर लिखा। गुरु के निधन के बाद उनकी देह पलंग अथवा कब्र में रखी हुई है, खुसरो यह दृश्य देख विरत मन से वापस हो गए। वे कहते हैं, इस निधन के बाद चारों दिशाओं में रैन हो गई अर्थात अंधकार छा गया। गुरु के प्रति असीम लगाव को प्रकट करता यह दोहा अपनी मार्मिक अभिव्यक्ति के लिहाज से अत्यंत उल्लेखनीय है।

- **काहे को ब्याही बिदेस रे, ...**

व्याख्या

इस गीत में परदेश में ब्याही गई बेटी अपनी पीड़ा और विछोह को अपने पिता को संबोधित करते हुए व्यक्त कर रही है। परंपरागत भारतीय समाज में बेटी के लिए विवाह का अर्थ अपने बचपन से लेकर युवा दिनों (ब्याह से पूर्व तक) की सहेलियों तथा मायके से संबद्ध अभिभावक एवं संबंधियों से बिछुड़ जाना था। तेरहवीं-चौदहवीं शताब्दी में जब खुसरों यह गीत लिख रहे थे तब एक सामान्य लड़की के लिए यह विडंबना कहीं ज्यादा गहरी थी। इस गीत में परदेश में ब्याही गई बेटी कृषक जीवन एवं लोक जीवन से संबंधित विभिन्न संदर्भों के माध्यम से अपने पिता अथवा मायके से संबंध, विडंबना एवं विछोह को व्यक्त करती है। वह अपने को पिता के बाग की कोयल बताती है जो घर-बार में कुहुकती रहती है। अर्थात जिसके होने से चहल-पहल, रौनक बनी रहती है। फिर स्वयं को चिड़िया के रूप में प्रस्तुत करते हुए उस विडंबना को रखती है कि जहाँ उसका लालन-पालन (चुग्गा चुगत) हुआ है वहाँ से एक दिन उसे चले जाना (उड़ जाना) है। वह बेले के फूल की तरह है जिससे घर में सुंदरता व्यापती है लेकिन एक दिन उसे कोई माँग कर (ब्याह कर) ले जाता है। फिर वह

अपनी निरीहता व्यक्त करते हुए कहती है कि मैं खूंटे से बँधी गाय के समान हूँ, जहाँ हाँक दोगे चली जाऊँगी। शादी के बाद उसका गुड़ियों एवं सहेलियों का संग-साथ छूट गया। पारिवारिक स्नेह और पीड़ा को अभिव्यक्त करते हुए वह कहती है कि जब पिता के महल से डोली निकली, इस विछोह के कारण भाई पछाड़ खाकर गिर गया। मायके के पशु-पक्षी भी उसके संगी-साथी हैं। डोली जाते देख कोयल भी पुकारने लगी। वह कोयल को सांत्वना देते हुए कहती है, ऐ कोयल तू क्यों रोती है, जगत की रीति के अनुसार मैं परदेश जा रही हूँ। यह गीत अंत में अत्यंत कारुणिक हो जाता है जिस पिता को संबोधित करते हुए वह अपनी भावना व्यक्त करती है; जब उसके पति उसकी डोली लेकर जा रहे हैं, पीछे-पीछे पिता नंगे पाँव भागते हुए आ रहे हैं।

- **खुसरो रैन सुहाग की जागी पी के संग ....**

व्याख्या

खुसरो परमात्मा की परिकल्पना पति के रुप में करते हुए कहते हैं कि जिस दिन मैं सुहागिन बनी (मेरी शादी हुई) उस पूरी रात अपने पिया के साथ जागती रही। उनके साथ जो हमारा रागात्मक संबंध बना उसमें हम दोनों एक-से हो गए। हमारे बीच कोई भेद नहीं रहा। यहाँ खुसरो ने ईश्वर से साक्षात्कार की दशा में भक्त और भगवन के एकाकार हो जाने की दशा को दांपत्य के रूपक में अभिव्यक्त किया है।

- **देख मैं अपने हाल को रोऊं, जार-ओ-जार। ...**

व्याख्या

खुसरो भक्त के रूप में प्रभु की क्षमता और अपनी अक्षमता की अभिव्यक्ति करते हुए कहते हैं कि प्रभु सद्‌गुणों से परिपूर्ण है जबकि मैं अवगुणों से भरा हूँ। उनके (खुसरो के) अवगुण

परमात्मा को पाने की राह में बाधा बन रहे हैं। इस कारण वे भक्त के रूप में दुखी हो रहे हैं, रो रहे हैं।

1.8 सारांश

- अमीर खुसरो खड़ी बोली हिंदी के प्रारंभिक कवि हैं।
- उनके जीवन काल की अवधि 1255 ई. से 1324 ई. के बीच है।
- खुसरो के ननिहाल में हिंदू संस्कृति की मौजूदगी और ददिहाल में दरबारी और इस्लामी संस्कृति के मौजूद होने के कारण उनके व्यक्तित्व में अनेक संस्कृतियों का सहज ही मेल हो गया।
- वे विभिन्न सुलतानों के दरबार में रहे तथा फारसी और हिंदवी दोनों में रचनाएँ कीं।
- हिंदी साहित्य में सबसे पहले अमीर खुसरो ने ही पहेलियाँ बनाने का रिवाज शुरू किया। हिंदी में उनके द्वारा प्रयुक्त अन्य काव्य-रूप हैं– दोहा, कव्वाली, दो सखुने, मुकरी आदि।
- उनके द्वारा रचित दोहों, गजलों और कव्वालियों में लोक रंग की अनुपम छटा नजर आती है।
- खुसरों ने सरल और स्वाभाविक भाषा को अपनाया।
- खुसरो की कविता लोक संस्कृति से अपने गहरे संबंध के कारण भी याद की जाती है।

1.9 शब्दावली

उत्तरवर्ती – बाद में आनेवाला।

उपनाम – पुकारने का नाम।

मर्सिया – यह शब्द अरबी के 'रिसा' से बना है जिसका अर्थ होता है किसी की मौत पर विलाप करना।

सूफी विचारधारा – सूफीवाद या तसव्वुफ इस्लाम का एक रहस्यवादी पंथ है। इसके अनुयायियों को सूफी कहते हैं। इनका लक्ष्य आध्यात्मिक प्रगति एवं मानवता की सेवा रहा है। सूफी राजाओं से दान, उपहार स्वीकार नहीं करते थे और सादा जीवन बिताना पसंद करते थे। यह वास्तव में प्रेम पर आधारित एक भक्ति पद्धति है, जिसमें रूढ़ियों और कट्टरताओं के प्रति असहमति होती है। इस धारा में गायन, वादन की केंद्रीय भूमिका थी, जिनसे अपने समर्पण को व्यक्त किया जा सकता है। इस विचार के दरवाज़े सभी वर्गों, जातियों यहाँ तक कि स्त्रियों के लिए भी खुले थे, यह असमानता पर आधारित समाज में एक प्रगतिशील मान्यता थी।

दो सखुने – सखुन फारसी भाषा का एक शब्द है, इसका अर्थ कथन या उक्ति है।

निस्बतें – अरबी भाषा का एक शब्द है, इसका अर्थ है संबंध या तुलना।

अनमेलिय या ढकोसले – अनमेलिय या ढकोसले का प्रचलित अर्थ है– आडंबर, पाखंड, ऊपरी ठाट-बाट या एक विशेष प्रकार की कविता,

उक्ति, दोहे जिसका अर्थ ना हो और जो इतनी बेतुकी हो कि सुनकर फौरन हँसी छूट जाए।

मुकरी – पहेलीनुमा पद या छंद।

तामीर – निर्माण।

अमन – शांति।

जंग – युद्ध

शाही सेना – सम्राट की सेना।

संजीदगी – पूरे मन से पूरी गंभीरता से।

कसीदा – कसीदा फारसी भाषा का वह काव्यरूप है, जिसमें प्रशंसा होती है।

आस्वाद – किसी रचना का आनंद लेना।

आदिम – पुराना।

अभिधा – कोशगत अर्थ, शब्दार्थ।

व्यंजना – एक शब्द शक्ति जिसमें अर्थ विशिष्ट संदर्भ से जुड़ता है।

रूढ़ – प्रचलित अर्थ।

कर्मकांड – हिंदू परंपरा का ऐसा विधान जिसमें विधि-निषेध के अनुसार धार्मिक क्रियाएँ संपन्न होती हैं।

रसूल – ईश्वर का दूत।

तज – त्याग।

नैन – नेत्र।

बटी – जड़ी-बूटी।

मदवा – रस, पेय।

निजाम – निजामुद्दीन औलिया।

बलि – बलिहारी।

मोहे – मुझे।

1.10 उपयोगी पुस्तकें

- *महाकवि खुसरो*– सफदर आह; उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ
- *सूफी संत अमीर खुसरो*– डां. परमानंद पांचाल; इंद्रप्रस्थ इंटरनेशनल, 18-बी, साऊथ अनारकली, दिल्ली

1.11 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. (क) अमीर खुसरो का वास्तविक नाम अबुल हसन था।

   (ख) अमीर खुसरो ने अपनी भाषा को 'हिंदवी' नाम से पुकारा।

   (ग) अमीर खुसरो के पिता का नाम अमीर सैफुद्दीन था। भारत में उनका निवास उत्तर प्रदेश के एटा जिले के पटियाली गाँव में था।

   (घ) अमीर सैफुद्दीन लाचीन कबीले से संबंधित थे। वे तुर्किस्तान के रहने वाले थे।

2. देखिए– भाग 1.2

3. देखिए– भाग 1.4

4. (क) बूझ पहेली में उत्तर पहेली में ही निहित होता है, जबकि बिन बूझ पहेली में उत्तर अनुमान और युक्तियों से पाया जाता है।

(ख) 'हिंदवी' का तात्पर्य भाषा के उस रूप से है जो तेरहवीं-चौदहवीं' शताब्दी में हिंदुस्तान की आम जनता द्वारा बोली-समझी जाती थी।

(ग) फारसी भाषा के शब्द सखुन का अर्थ कथन अथवा उक्ति है। खुसरो द्वारा विकसित 'दो सखुने' में दो प्रश्न होते थे जिनका जवाब एक ही होता था।

(घ) अमीर खुसरो ने 'हिंदवी' से अपने संबंध का बयान करते हुए कहा कि मैं हिंदुस्तानी तुर्क हूँ, मैं हिंदुस्तान की तूती हूँ। अगर वास्तव में मुझसे कुछ पूछना चाहते हो तो 'हिंदवी' भाषा में पूछो। मैं तुम्हें 'हिंदवी' में अनुपम बातें बता सकूँगा।

5. देखिए– भाग 1.6

6. देखिए– भाग 1.5